ISSN (O): 2320-5407
ISSN (P): 3107-4928

Journal Homepage: - www.journalijar.com

INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH (IJAR)

Article DOI: 10.21474/IJAR01/23033
DOI URL: http://dx.doi.org/10.21474/IJAR01/23033

CONFERENCE PAPER

संगीत के व्यावसायिक पहलू: शिक्षा, मंच और डिजिटल माध्यमों के संदर्भ में एक अध्ययन

Renu Gupta[1] and Dr. Ravjot Kaur Malhi[2]

1. Research Scholar Department of Music and Theatre Lovely Professional University Phagwara, Punjab.
2. Associate Professor Department of Music and Theatre Lovely Professional University Phagwara, Punjab.

Manuscript Info

Manuscript History
Received: 04 January 2026
Final Accepted: 08 February 2026
Published: March 2026

Key words:-
संगीत का व्यावसायीकरण; संगीत शिक्षा; मंचीय संगीत; डिजिटल माध्यम; संगीत उद्योग; रोजगार के अवसर; सांस्कृतिक मूल्य

Abstract

संगीत के बदलते स्वरूप और उसके व्यावसायीकरण की बहुआयामी प्रक्रिया का विश्लेषण करता है। परंपरागत रूप से संगीत को साधना, संस्कृति और आत्मिक अभिव्यक्ति का माध्यम माना गया है, किंतु समकालीन युग में यह एक संगठित उद्योग के रूप में भी उभरकर सामने आया है। इस अध्ययन का उद्देश्य संगीत शिक्षा, मंचीय प्रस्तुतियों तथा डिजिटल माध्यमों के माध्यम से संगीत के व्यावसायिक विकास को समझना है। संगीत शिक्षा के क्षेत्र में आज संस्थागत प्रशिक्षण, ऑनलाइन कक्षाएँ, सर्टिफिकेट कोर्स, और व्यावसायिक डिग्रियों ने संगीत को रोजगारोन्मुख बनाया है। गुरू-शिष्य परंपरा के साथ-साथ आधुनिक शिक्षण प्रणालियों ने संगीतकारों के लिए करियर के नए अवसर सृजित किए हैं। मंचीय संगीत के संदर्भ में संगीत सभाएँ, कॉन्सर्ट, रियलिटी शोज़ और अंतरराष्ट्रीय मंचों ने कलाकारों को आर्थिक और सामाजिक पहचान प्रदान की है। डिजिटल माध्यमों ने संगीत के व्यावसायिक स्वरूप को और अधिक व्यापक बना दिया है। यूट्यूब, ओटीटी प्लेटफॉर्म, म्यूजिक स्ट्रीमिंग ऐप्स और सोशल मीडिया के माध्यम से कलाकार सीधे श्रोताओं तक पहुँच बना रहे हैं, जिससे आय के नए स्रोत जैसे विज्ञापन, सब्सक्रिप्शन और ब्रांड सहयोग संभव हो सके हैं। यह शोधपत्र इस तथ्य पर प्रकाश डालता है कि डिजिटल तकनीक ने न केवल संगीत के प्रचार-प्रसार को सरल बनाया है,

"© 2026 by the Author(s). Published by IJAR under CC BY 4.0. Unrestricted use allowed with credit to the author."

Corresponding Author:- Renu Gupta
Address:-Research Scholar Department of Music and Theatre Lovely Professional University Phagwara, Punjab.

बल्कि संगीत को वैश्विक बाज़ार से भी जोड़ा है। अध्ययन यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि संगीत का व्यावसायीकरण जहाँ कलाकारों को आत्मनिर्भरता और अवसर प्रदान करता है, वहीं यह गुणवत्ता, मौलिकता और सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़े प्रश्न भी उठाता है। अतः संतुलित दृष्टिकोण के साथ संगीत के व्यावसायिक और सांस्कृतिक पक्षों को समझना आज के समय की आवश्यकता है।

Introduction:-

परंपरागत समाजों में संगीत को गुरुकुल प्रणाली या उस्ताद-शागिर्द परंपरा के माध्यम से सीखा जाता था। यह शिक्षा सांस्कृतिक उत्तराधिकार पर आधारित थी, न कि व्यापारिक उद्देश्य पर। मध्यकाल में राजाओं और नवाबों द्वारा कलाकारों को संरक्षण दिया गया, जिससे संगीत को आर्थिक सहारा मिला। संगीत अपनी सबसे प्राचीन उत्पत्ति से ही मानवता के साथ भावनात्मक अभिव्यक्ति, प्रतीकात्मक संप्रेषण और सामाजिक एकता के एक विशिष्ट माध्यम के रूप में जुड़ा रहा है। किंतु इसके शैक्षिक निहितार्थों को प्रायः केवल सृजनात्मक क्षेत्र से संबंधित भूमिका तक सीमित माना गया है। वास्तव में, शैक्षणिक, तंत्रिका-विज्ञान (न्यूरोसाइंस) तथा मानवविज्ञान (एंथ्रोपोलॉजी) के क्षेत्रों में बढ़ते शोध यह दर्शाते हैं कि संगीत एक सार्वभौमिक भाषा के रूप में महत्वपूर्ण शैक्षिक मूल्य रखता है, जो प्रारंभिक बाल्यावस्था से ही व्यक्तियों के संज्ञानात्मक, भावात्मक तथा सामाजिक विकास को प्रोत्साहित करने में सक्षम है। औपनिवेशिक काल में ग्रामोफोन रिकॉर्ड और रेडियो के आगमन से संगीत पहली बार बड़े पैमाने पर बाजार से जुड़ा। स्वतंत्रता के बाद फ़िल्म उद्योग और रेडियो प्रसारण ने संगीत को लोकप्रिय व्यवसाय बनाया। 21वीं सदी में इंटरनेट और डिजिटल प्लेटफॉर्म्स ने संगीत को वैश्विक उद्योग में परिवर्तित कर दिया।

संगीत शिक्षा का व्यावसायिक स्वरूप:-

(क) संस्थागत शिक्षा:-

आज संगीत शिक्षा केवल शौक तक सीमित नहीं रही, बल्कि एक व्यावसायिक करियर विकल्प बन चुकी है। विश्वविद्यालयों, संगीत अकादमियों और निजी संस्थानों में डिग्री और डिप्लोमा पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। ये संस्थान न केवल शास्त्रीय संगीत, बल्कि पाश्चात्य संगीत, फ्यूजन, संगीत उत्पादन और साउंड इंजीनियरिंग जैसे क्षेत्रों में प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। संगीत विद्यालयों की फीस संरचना, प्रमाणपत्र मूल्य और ब्रांड पहचान इस क्षेत्र को एक संगठित व्यवसाय बनाती है।

(ख) ऑनलाइन संगीत शिक्षा:-

डिजिटल युग में ऑनलाइन शिक्षा का महत्व तेजी से बढ़ा है। वीडियो लेक्चर, लाइव क्लासेस और मोबाइल ऐप्स के माध्यम से संगीत सीखना आसान हो गया है। इससे शिक्षक और विद्यार्थी दोनों को लाभ हुआ है। उदाहरण के लिए, प्लेटफॉर्म जैसे यूट्यूब और स्पोटिफाई केवल संगीत सुनने का माध्यम नहीं, बल्कि शैक्षणिक सामग्री और प्रचार के भी मंच बन चुके हैं। कई कलाकार अपने चैनलों के माध्यम से विज्ञापन, सब्सक्रिप्शन और ब्रांड सहयोग से आय अर्जित करते हैं।

(ग) रोजगार और उद्यमिता:-

संगीत शिक्षा से प्रशिक्षित व्यक्ति शिक्षक, प्रशिक्षक, कंपोज़र, अरेंजर, साउंड इंजीनियर और म्यूजिक थेरेपिस्ट जैसे अनेक क्षेत्रों में रोजगार प्राप्त कर सकता है। इस प्रकार शिक्षा स्वयं एक व्यावसायिक निवेश बन जाती है।

मंचीय प्रदर्शन और व्यावसायिकता:-

(क) पारंपरिक मंच से आधुनिक शो तक:-

पहले संगीत मंच मंदिरों, मेलों और राजदरबारों तक सीमित थे। आज कॉन्सर्ट, फेस्टिवल, कॉर्पोरेट इवेंट्स और टेलीविजन रियलिटी शोज़ ने मंचीय संगीत को विशाल व्यवसाय में बदल दिया है। लाइव कॉन्सर्ट्स में टिकट बिक्री, प्रायोजन, विज्ञापन और मर्चेंडाइज (टी-शर्ट, एल्बम आदि) से कलाकारों और आयोजकों को आय होती है।

(ख) कलाकारों की ब्रांड वैल्यू:-

आज कलाकार केवल गायक या वादक नहीं, बल्कि एक ब्रांड बन चुका है। उनकी लोकप्रियता सोशल मीडिया फॉलोअर्स, यूट्यूब व्यूज और स्टेज शो की मांग से मापी जाती है। बड़े कलाकारों के एक शो की फीस लाखों या करोड़ों में होती है। मंचीय प्रदर्शन कलाकार को पहचान और आर्थिक स्थिरता दोनों प्रदान करता है।

(ग) सांस्कृतिक पर्यटन और संगीत:-

संगीत महोत्सव और सांस्कृतिक कार्यक्रम पर्यटन उद्योग से जुड़े हैं। राजस्थान, गोवा और केरल जैसे राज्यों में संगीत उत्सव विदेशी पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, जिससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को लाभ होता है।

अध्ययन के उद्देश्य:-

1. डिजिटल माध्यम और संगीत का व्यवसायीकरण का अध्ययन
2. संगीत शिक्षा के व्यावसायिक स्वरूप का अध्ययन

डिजिटल माध्यम और संगीत का व्यवसायीकरण:-

(क) रिकॉर्डिंग उद्योग से स्ट्रीमिंग तक:-

पहले संगीत की बिक्री कैसेट, सीडी और डीवीडी के माध्यम से होती थी। अब डिजिटल स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म्स ने इस मॉडल को बदल दिया है। कलाकार अपने गीतों को ऑनलाइन अपलोड कर विश्वभर के श्रोताओं तक पहुँचा सकते हैं। डिजिटल माध्यम ने छोटे और स्वतंत्र कलाकारों को भी अवसर दिया है कि वे बिना किसी बड़े प्रोडक्शन हाउस के समर्थन के अपनी पहचान बना सकें।

(ख) सोशल मीडिया और प्रचार:-

फेसबुक, इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म कलाकारों के लिए प्रचार का सबसे बड़ा साधन बन गए हैं। वायरल वीडियो और रील्स से रातों-रात प्रसिद्धि मिल सकती है। इससे विज्ञापन और ब्रांड डील्स के नए रास्ते खुलते हैं।

(ग) कॉपीराइट और रॉयल्टी:-

डिजिटल युग में कॉपीराइट और बौद्धिक संपदा अधिकार अत्यंत महत्वपूर्ण हो गए हैं। गीतों की स्ट्रीमिंग से कलाकारों को रॉयल्टी मिलती है। हालांकि, पायरेसी और अवैध डाउनलोड जैसी समस्याएँ भी इस क्षेत्र की चुनौती हैं।

सकारात्मक प्रभाव :-

संगीत के व्यावसायीकरण और आधुनिक तकनीकी विकास के परिणामस्वरूप इसके कई महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव सामने आए हैं, जिनका प्रभाव केवल कलाकारों तक सीमित न होकर समाज, संस्कृति और अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों तक विस्तृत है। निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से इन प्रभावों को विस्तार से समझा जा सकता है—

रोजगार सृजन:-

संगीत उद्योग ने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से लाखों लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान किए हैं। इस क्षेत्र में केवल गायक और वादक ही नहीं, बल्कि संगीत शिक्षक, संगीत निर्देशक, गीतकार, साउंड इंजीनियर, रिकॉर्डिंग तकनीशियन, वीडियो निर्माता, मंच प्रबंधक, प्रकाश एवं ध्वनि व्यवस्था से जुड़े कर्मी, प्रचार-प्रसार विशेषज्ञ और डिजिटल कंटेंट क्रिएटर जैसे अनेक पेशे विकसित हुए हैं।

वैश्विक पहचान:-
डिजिटल प्लेटफॉर्म और अंतरराष्ट्रीय मंचों के माध्यम से स्थानीय एवं पारंपरिक संगीत को वैश्विक श्रोताओं तक पहुँचने का अवसर मिला है। पहले जो संगीत किसी विशेष क्षेत्र या समुदाय तक सीमित था, वह अब विश्व के विभिन्न देशों में सुना और सराहा जा रहा है। इससे न केवल कलाकारों को अंतरराष्ट्रीय पहचान मिलती है, बल्कि संबंधित संस्कृति और भाषा को भी वैश्विक मंच प्राप्त होता है।

नवाचार और रचनात्मक प्रयोग:-
संगीत उद्योग में व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा और तकनीकी प्रगति ने नवाचार को प्रोत्साहित किया है। फ्यूजन म्यूजिक, इलेक्ट्रॉनिक म्यूजिक, रैप, जैज़ और लोक संगीत के मिश्रण जैसे नए-नए प्रयोग सामने आए हैं। डिजिटल सॉफ्टवेयर और आधुनिक वाद्य यंत्रों ने संगीत रचना को अधिक सुलभ और विविधतापूर्ण बना दिया है।

आर्थिक योगदान:-
संगीत उद्योग राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है। एल्बम बिक्री, लाइव कॉन्सर्ट, डिजिटल स्ट्रीमिंग, विज्ञापन, फिल्म संगीत और ब्रांड प्रमोशन के माध्यम से बड़ी मात्रा में राजस्व उत्पन्न होता है। इसके साथ ही, संगीत पर्यटन और सांस्कृतिक उत्सवों से स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी लाभ मिलता है। सरकार को कर के रूप में आय प्राप्त होती है और देश की रचनात्मक अर्थव्यवस्था को मजबूती मिलती है। इस प्रकार संगीत केवल सांस्कृतिक धरोहर नहीं, बल्कि एक सशक्त आर्थिक संसाधन भी बन चुका है। संगीत के सकारात्मक प्रभाव रोजगार सृजन, वैश्विक पहचान, नवाचार और आर्थिक विकास के रूप में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। यह न केवल व्यक्तिगत कलाकारों के जीवन को समृद्ध करता है, बल्कि समाज और राष्ट्र के सांस्कृतिक एवं आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

चुनौतियाँ और समस्याएँ :-
संगीत के बढ़ते व्यावसायीकरण और डिजिटल विस्तार ने जहाँ अनेक अवसर प्रदान किए हैं, वहीं इसके साथ कई गंभीर चुनौतियाँ और समस्याएँ भी उत्पन्न हुई हैं। ये समस्याएँ न केवल कलाकारों की रचनात्मक स्वतंत्रता को प्रभावित करती हैं, बल्कि संगीत की सांस्कृतिक गुणवत्ता और सामाजिक भूमिका पर भी प्रश्नचिह्न लगाती हैं। निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से इन चुनौतियों को विस्तार से समझा जा सकता है—

व्यावसायिक दबाव :-
आज संगीत का मूल्यांकन उसकी कलात्मक गहराई के बजाय उसकी व्यावसायिक सफलता के आधार पर अधिक किया जाने लगा है। रिकॉर्ड कंपनियाँ और डिजिटल प्लेटफॉर्म ऐसे संगीत को प्राथमिकता देते हैं जो जल्दी लोकप्रिय हो और अधिक लाभ कमाए। परिणामस्वरूप, कलाकारों पर यह दबाव बढ़ जाता है कि वे बाज़ार की मांग के अनुसार ही संगीत रचें। इससे मौलिकता, शास्त्रीयता और प्रयोगधर्मिता प्रभावित होती है।

पारंपरिक संगीत की उपेक्षा :-
व्यावसायिक संगीत के प्रभुत्व के कारण शास्त्रीय और लोक संगीत को अपेक्षित मंच और प्रचार नहीं मिल पाता। टेलीविजन, रेडियो और डिजिटल मीडिया पर मुख्यतः लोकप्रिय और फिल्मी संगीत को ही स्थान दिया जाता है। इससे पारंपरिक कलाकारों को आर्थिक और सामाजिक समर्थन कम मिलता है। धीरे-धीरे युवा पीढ़ी का झुकाव भी इन शैलियों से दूर होता जा रहा है, जिससे सांस्कृतिक विरासत के लुप्त होने का खतरा उत्पन्न हो गया है।

आर्थिक असमानता :-
संगीत उद्योग में आय का वितरण असमान है। प्रसिद्ध और बड़े कलाकारों को अधिक मंच, अधिक प्रचार और अधिक पारिश्रमिक मिलता है, जबकि छोटे और उभरते कलाकारों को सीमित अवसरों में ही काम करना पड़ता है। डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भी लोकप्रिय कलाकारों के गीत अधिक सुने जाते हैं, जिससे उन्हें अधिक रॉयल्टी मिलती है, जबकि नए कलाकारों की आय बहुत कम रहती है।

डिजिटल पायरेसी :-

डिजिटल तकनीक ने संगीत को व्यापक रूप से उपलब्ध कराया है, किंतु इसके साथ पायरेसी की समस्या भी बढ़ी है। अवैध डाउनलोड, मुफ्त स्ट्रीमिंग और कॉपी किए गए कंटेंट से कलाकारों और संगीत निर्माताओं की आय में भारी कमी आती है। इससे कॉपीराइट और बौद्धिक संपदा अधिकारों का उल्लंघन होता है। संगीत उद्योग में व्यावसायीकरण और डिजिटल विस्तार ने जहाँ नए अवसर पैदा किए हैं, वहीं कला की गुणवत्ता, पारंपरिक संगीत का संरक्षण, आर्थिक समानता और बौद्धिक संपदा की सुरक्षा जैसी गंभीर चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं। इन समस्याओं का समाधान तभी संभव है जब नीति-निर्माता, शैक्षिक संस्थान, मीडिया और समाज मिलकर संतुलन स्थापित करें, ताकि संगीत का विकास केवल आर्थिक लाभ तक सीमित न रहकर सांस्कृतिक और रचनात्मक मूल्यों को भी सुरक्षित रख सके।

संतुलन की आवश्यकता: कला और व्यवसाय :-

संगीत का व्यावसायीकरण आधुनिक समय की एक अपरिहार्य वास्तविकता है, क्योंकि कलाकारों को अपने जीवनयापन, साधनों के विकास और रचनात्मक कार्य को निरंतर आगे बढ़ाने के लिए आर्थिक संसाधनों की आवश्यकता होती है। परंतु यदि संगीत को केवल लाभ कमाने का साधन बना दिया जाए और उसकी कलात्मक आत्मा तथा सांस्कृतिक मूल्यों की उपेक्षा की जाए, तो उसका सामाजिक और शैक्षिक महत्व धीरे-धीरे क्षीण हो सकता है। सबसे पहले, यह आवश्यक है कि संगीत को एक व्यवसाय के रूप में स्वीकार करते हुए भी उसकी रचनात्मक स्वतंत्रता और सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखा जाए। कलाकार को बाजार की मांग के अनुसार ही नहीं, बल्कि अपनी संवेदनशीलता, अनुभव और परंपरा के अनुरूप संगीत सृजन करने का अवसर मिलना चाहिए। यदि केवल लोकप्रियता और तात्कालिक लाभ को प्राथमिकता दी जाएगी, तो संगीत की गहराई, भावनात्मकता और मौलिकता प्रभावित होगी। इसलिए व्यावसायिक मंचों को ऐसे संगीत को भी स्थान देना चाहिए जो सांस्कृतिक दृष्टि से मूल्यवान हो, भले ही वह तुरंत लाभकारी न हो।

दूसरे, शिक्षा संस्थानों की भूमिका इस संतुलन को स्थापित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण है। संगीत शिक्षा केवल तकनीकी कौशल जैसे गायन, वादन या रिकॉर्डिंग तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि उसमें सौंदर्यबोध, अनुशासन, नैतिकता और सांस्कृतिक चेतना का भी समावेश होना चाहिए। तीसरे, मंचीय प्रस्तुतियों में गुणवत्ता और विविधता बनाए रखना आवश्यक है। आज कई मंच केवल व्यावसायिक दृष्टि से सफल और लोकप्रिय कलाकारों तक सीमित रह जाते हैं, जिससे नए और पारंपरिक कलाकारों को अवसर नहीं मिल पाता। यदि मंचों पर शास्त्रीय, लोक, फ्यूजन और आधुनिक संगीत की विविध शैलियों को समान महत्व दिया जाए, तो इससे न केवल सांस्कृतिक समृद्धि बढ़ेगी, बल्कि दर्शकों की रुचि और समझ भी व्यापक होगी।

चौथे, डिजिटल माध्यमों का विवेकपूर्ण उपयोग अत्यंत आवश्यक है। इंटरनेट और सोशल मीडिया ने संगीत को वैश्विक स्तर पर पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, किंतु इनका उपयोग केवल लाभ कमाने और त्वरित प्रसिद्धि के लिए नहीं होना चाहिए। डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण, दुर्लभ रचनाओं के संग्रह और नई पीढ़ी तक पारंपरिक संगीत पहुँचाने के लिए किया जाना चाहिए। इससे संगीत की विविधता बनी रहेगी और उसकी शैक्षिक एवं सांस्कृतिक भूमिका सुदृढ़ होगी। संगीत तभी सार्थक रूप से विकसित होगा जब उसमें कला और व्यवसाय के बीच संतुलन स्थापित किया जाएगा। आर्थिक स्थिरता कलाकार को सृजन के लिए स्वतंत्रता प्रदान करती है, जबकि कलात्मक और सांस्कृतिक मूल्य संगीत को समाज के लिए उपयोगी और प्रेरणादायक बनाते हैं। यदि यह संतुलन बना रहता है, तो संगीत न केवल एक सफल उद्योग बनेगा, बल्कि मानवीय संवेदनाओं, सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक एकता का सशक्त माध्यम भी बना रहेगा।

निष्कर्ष:-

संगीत आज एक बहुआयामी व्यवसाय बन चुका है, जिसमें शिक्षा, मंच और डिजिटल माध्यमों की महत्वपूर्ण भूमिका है। संगीत शिक्षा ने इसे एक पेशेवर करियर का रूप दिया है, मंचीय प्रदर्शन ने कलाकारों को पहचान और आय का साधन प्रदान किया है, और डिजिटल माध्यमों ने इसे वैश्विक स्तर पर पहुँचाया है। यद्यपि व्यावसायीकरण से अनेक अवसर उत्पन्न हुए हैं, फिर भी कला की

मौलिकता और सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखना एक बड़ी चुनौती है। अतः यह कहा जा सकता है कि संगीत का भविष्य तभी उज्ज्वल होगा जब कला और व्यवसाय के बीच संतुलन स्थापित किया जाएगा—जहाँ संगीत न केवल लाभ का साधन बने, बल्कि समाज को सौंदर्य, शांति और सांस्कृतिक समृद्धि भी प्रदान करे।

संदर्भ:-

1. शर्मा तरुणा. (2015). भारतीय संगीत में दूरस्थ शिक्षा का औचित्य एवं महत्व. कोटा विश्वविद्यालय:https://www.uok.ac.in/notifications/(2)%20तरुणा%20शर्मा.pdf
2. आईएफपीआई. वैश्विक संगीत रिपोर्ट 2023. इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ द फोनोग्राफिक इंडस्ट्री, 2023.
3. मिश्रा संजय, (लेख), 22 सितम्बर 2013, ओपन डिस्टेंस एंड इ-लर्निंग इन इंडिया।
4. अरोड़ा रीता, शैक्षिक तकनीकी, वर्धमान महावीर खुला विश्वविद्यालय, कोटा, पृ०-336
5. कोलेट, बी., रेमी, ई., एट अल. डिजिटलाइज़्ड मार्केट में कल्चरल इंटरमीडियरीज़ के (नहीं) बदलते नेचर की खोज: इंडिपेंडेंट म्यूज़िक से मिली जानकारी [जे]. जर्नल ऑफ़ मार्केटिंग मैनेजमेंट, 2023, 39(1):443-469.
6. लॉघे, डी. (2007) म्यूज़िक मीडिया इन यंग पीपल्स एवरीडे लाइव्स, इन म्यूज़िक, साउंड एंड मल्टीमीडिया: फ्रॉम द लाइव टू द वर्चुअल (पेज 172-187)। एडिनबर्ग: एडिनबर्ग यूनिवर्सिटी प्रेस। https://doi.org/10.1515/9780748630905-013
7. यूनेस्को. सांस्कृतिक विविधता की संरक्षण और संवर्धन पर अभिसमय. यूनेस्को पब्लिशिंग, 2005.
8. अल्बर्ट, डी.जे. (2015) 'म्यूज़िक एजुकेशन में सोशल मीडिया: स्टूडेंट्स के रहने की जगह तक लर्निंग को बढ़ाना। वॉल्यूम 102, नंबर 2, पेज 31-38। म्यूज़िक सेज पब्लिकेशन लिमिटेड
9. मायर, लेस्ली. (2019). 'पॉपुलर म्यूज़िक, स्ट्रीमिंग, और प्रमोशनल मीडिया: स्थायी और उभरते इंडस्ट्रियल लॉजिक्स'. मेकिंग मीडिया. चैप्टर 24, पेज.321-334.